I व्यावसायिक बैंकों के कार्य एवं सेवाएं

(Function and Services of Commercial Bank)

आधुनिक विश्व में व्यावसायिक बैंक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्यों का सम्पादन करते हैं। व्यावसायिक बैंकों के कार्यों को हम निम्नांकित तीन वर्गों में विभाजित कर अध्ययन कर सकते हैं!—

1. प्राथमिक कार्य (Primary Function)!—

आधुनिक व्यावसायिक बैंकों के निम्नांकित दो प्राथमिक कार्य हैं!—

(a) जमा ग्रहण करना (Acceptance of Deposits)!—

व्यावसायिक बैंकों का एक महत्वपूर्ण कार्य अपने ग्राहकों से जमा के रूप में मुद्रा प्राप्त करना है। समाज के अधिकांश व्यक्ति अथवा संस्था अपनी बचत को चोरी जाने के भय अथवा ब्याज कमाने के लिए किसी व्यावसायिक बैंक में जमा करते हैं। बैंक में रुपया जमा करनेवाले को उक्त लाभ के अतिरिक्त यह व्यवस्था भी होती है कि वह सुविधानुसार अपनी रकम को वापिस ले सकते हैं। बैंक के लिए इस प्रकार का जमा विशेष रूप से महत्वपूर्ण सिद्ध होता है, क्योंकि इसी के आधार पर कर्ज आदि देकर अपने लाभ का एक प्रमुख भाग प्राप्त करता है।

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

बैंक प्राय: निम्नांकित तीन प्रकार के खाते में जमा स्वीकार या प्राप्त करते हैं :—

(i) स्थायी जमा (Fixed Deposit) :— स्थायी जमा खाते में रुपया एक निश्चित अवधि के लिए जमा किया जाता है। इस खाते से मुद्रा इस निश्चित अवधि के अन्दर नहीं निकाली जा सकती है। अतः इस प्रकार के जमा को सावधि जमा (Time deposit) भी कहा जाता है। इस प्रकार के जमा पर बैंक आकर्षक ब्याज देते हैं।

(ii) चालू जमा (Current Account) :— चालू जमा खाते में रुपया जमा करने वाला अपनी इच्छा के अनुसार रुपया जमा कर सकता है अथवा निकाल सकता है। इस पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं रहता है। इस प्रकार का जमा व्यापारियों तथा बड़ी-बड़ी संस्थाओं के लिए विशेष सुविधाजनक सिद्ध होता है क्योंकि इस खाते में से वे दिन में कई बार भी चेक द्वारा रुपया निकाल सकते हैं या जमा भी कर सकते हैं। बैंक इस प्रकार के जमा पर नाम मात्र का ब्याज देता है।

(iii) बचत जमा (Savings Deposit) :—

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

इस प्रकार का जमा छोटी-छोटी रकम वालों के लिए विशेष रूप से सुविधाजनक होता है। बैंक संचयी जमा खाते में जमा की गयी रकम पर, मामूली ब्याज भी देता है। इस प्रकार के खाते में रुपया जमा करने वाला जब चाहे रुपया जमा कर सकता है, किन्तु रुपया निकालने का अधिकार सीमित रहता है।

इसके अतिरिक्त व्यावसायिक बैंक अन्य कई प्रकार के खातों में भी रुपया जमा करते हैं, जैसे आवर्ती जमा खाता। व्यावसायिक बैंकों के अतिरिक्त कुछ अन्य बैंक या संस्थाएं भी सीमित मात्रा में विभिन्न प्रकार के जमा ग्रहण करने का कार्य करती हैं।

(b) ऋण प्रदान करना (Advancing of Loans):-

आधुनिक व्यावसायिक बैंकों का दूसरा महत्वपूर्ण प्राथमिक कार्य अपने ग्राहकों को ऋण प्रदान करना है। बैंकों के लाभ का अधिकांश भाग ऋण देने से ही प्राप्त होता है, अतः बैंकिंग व्यवस्था की सफलता भी बहुत कुछ ऋणों की समुचित व्यवस्था पर ही निर्भर करती है।

व्यावसायिक बैंक साधारणतया निम्नांकित प्रकार से ऋण प्रदान करते हैं :—

(i) नकद साख (Cash Credit) नकद साख व्यवस्था के अन्तर्गत बैंक अपने ग्राहकों को ऋण-पत्र (Bonds), व्यापारिक माल (Commercial goods), अथवा अन्य स्वीकृत प्रतिभूतियों के आधार पर ऋण प्रदान करते हैं। इस प्रकार के ऋण हमारे देश के व्यापारियों में अधिक प्रचलित हैं।

(ii) अधिविकर्ष (Overdraft) जब कभी कोई बैंक अपने ग्राहक को उसके खाते में जमा की गयी रकम से अधिक रकम निकालने की सुविधा प्रदान करता है तो उसे अधिविकर्ष की सुविधा कहते हैं। इस प्रकार के ऋण पर बैंक सूद बहुत अधिक लेता है। अधिविकर्ष की सुविधा बैंक में जमा रखने वाले केवल कुछ प्रमुख ग्राहकों को ही यह प्रदान करता है।

(iii) विनिमय बिलों को भुनाना (Discounting Bills of Exchange) बैंक द्वारा व्यापारियों को ऋण देने का एक अत्यधिक प्रचलित एवं महत्वपूर्ण तरीका है। बैंक विनिमय बिलों

अथवा अन्य व्यावसायिक बिलों को भुना कर भी व्यापारियों को कर्ज देता है। इस प्रकार का ऋण अल्पकालिन होता है।

(iv) ऋण एवं अग्रीम (Loans and Advances):- जब ऋण एक पूर्व निश्चित अवधि के लिए दिया जाता है तो इसे ऋण अथवा अग्रिम कहते हैं। इस प्रकार के ऋण पर ब्याज की दर भी बहुत अधिक रहती है, क्योंकि यह एक लम्बी अवधि के लिए दिया जाता है।

2. सामान्य उपयोगिता सम्बन्धी-कार्य (General Utility Function):- उपरोक्त दोनों प्राथमिक कार्यों के अतिरिक्त आधुनिक बैंक बहुत-से अन्य सामान्य उपयोगिता सम्बन्धी-कार्यों का भी सम्पादन करते हैं जिन्हें सामान्य उपयोगिता-सम्बन्धी कार्य कहा जाता है। सामान्य उपयोगिता सम्बन्धी कार्य में निम्नलिखित विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं:-

(a) साख प्रमाण-पत्रों तथा अन्य साख-पत्रों को जारी करना।
(b) विदेशी विनिमय का क्रय-विक्रय।
(c) मूल्यवान वस्तुओं तथा आभूषणों की सुरक्षा।
(d) व्यापारिक सूचना तथा आँकड़े आदि एकत्र करना।

उपरोक्त कार्यों के अतिरिक्त :- व्यावसायिक बैंक सामान्य उपयोगिता सम्बन्धी कई अन्य कार्य भी सम्पन्न करते हैं।

3. एजेन्सी सम्बन्धी कार्य :- उपरोक्त कार्यों के अतिरिक्त व्यावसायिक बैंक अपने ग्राहकों के एजेन्ट के रूप में भी कुछ कार्य सम्पन्न करते हैं। इन कार्यों को एजेन्सी - सम्बन्धी कार्य कहा जाता है।

निष्कर्ष :- बैंकों के उपरोक्त कार्यों के विवरण से वित्तीय व्यवस्था में इनका महत्व बिलकुल स्पष्ट हो जाता है। बैंक अपने ग्राहकों के लिए व्यापार तथा व्यवसाय सम्बन्धी प्रायः सभी कार्य करते हैं।